IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्दलित साहित्य का बदलता परिदृश्यश्

डॉ॰भगत गोकुल महादेव
सहा॰प्राध्यापक
विभागाध्यक्ष एहिन्दी विभाग ए
संभाजी कॉलेजएमुरुडए जिला
लातूर
महाराष्ट्र .413510

दलित साहित्य का प्रारम्भ आधुनिक आंदोलनों के कारण ही नहीं हुवा बल्कि मध्यकाल के मराठी संत साहित्य व इसके साथ ही पूरे उत्तर भारत में उठे भक्ति आंदोलनों को भी दलित साहित्य ने अपनी परंपरा के अनुरूप देखा ू मराठी में नामदेव एचोखामेला एसंत तुकाराम एएकनाथ आदि संत कवि आधुनिक मराठी दलित साहित्यकारों के लिए आदरणीय है ू हिन्दी में संत कबीर एरविदास एमीराबाई एदयाबाई एसहजोबाई व अन्य अनेक भक्त कवि हिन्दी के दलित साहित्य के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए ू दलित साहित्य की प्रेरणा का अहम पक्ष डॉ ॰ अंबेडकर की विचारधारा ही है ू ज्योतिबा फुले द्वारा तैयार की गयी जमीन पर डॉ ॰ अंबेडकरने जागृति के बीज बोये एजो उनके जीवन काल में पल्लवित पुष्पित होकर एक सशक्त दलित राजनीतिक एसामाजिक एसांस्कृतिक आंदोलन के प्रस्फुटित हो गए ू

हिंदी में दलित साहित्य का परिवेश प्रारंभ में जिस प्रकार का थाए उस प्रकार का अब नहीं रहा हैू वह समय के अनुसार बदलता नजर आ रहा है ।इसलिए दलित साहित्य में बदलाव अपरिहार्य है।दलित साहित्य का जन्म मराठी भाषा में हुआ है ।पहले दलित आत्मकथा लिखी जाती थी लेकिन अब सभी विधाओं में दलित साहित्य लिखा गया है ।दलित साहित्य शुरुआत में कैसा थाध् उसमें परिवर्तन हुआ या नहीं घ्अगर हुआ तो वर्तमान परिदृश्य क्या है घ्उसमें आए बदलाव के क्या कारण है घ्दलित साहित्य के संबंध में विद्वानों के दृष्टिकोण क्या हैध् यह भी जानना आवश्यक है।

दलित साहित्य 1960 के बाद मराठी साहित्य में आने वाला प्रवाह हैए जिसने अपनी अलग पहचान बनाई है। इस प्रकार के साहित्य में मराठी तथा हिंदी साहित्य की सीमाएं व्यापक हो गई है ।हिंदी में दलित साहित्य लेखन को मराठी साहित्य से प्रेरणा मिली। दलित साहित्यकार इस बात पर अड़े हुए हैं कि दलित रचना वही है जिसका रचनाकार दलित है ।जबकि गैर दलितों में ऐसे वरिष्ठ लेखक हैं एजो इस बात को मानते नहीं हैं। वे दलित रचना उसे मानते हैं जिसकी अंतर्वस्तु दलित जीवन संदर्भ वाली है। जिसमें दलितों के सरोकार सन्निहित हैआई यह बात तर्कसंगत प्रतीत होतीए है परंतु दलित लेखक इसको स्वीकारने को तैयार नहीं है। जो भोगता है एवही जानता है।

दलित समाज के दुख तकलीफों को गैर दलित लेखकों ने भी अपने साहित्य में लिखा है ।लेकिन उनके साहित्य की यथार्थता में सहानुभूति दिखाई देती नहीं ।गैर दलितों के साहित्य में केवल सहानुभूति का दिखावा ही दिखाई देता है। अतः जन्म सिद्ध दलित लेखकों की विद्रोह और नकार से युक्त ऐसी दलित

2

संवेदना की अभिव्यक्ति करने वाले दलित जीवन अनुभवों का चित्रण करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है । दलित साहित्य के बारे में माता प्रसाद का कहना है श दलित साहित्य केवल दलितों का नहीं
है एबल्कि जिंहोने भी दलितों की पीड़ा का अनुभव करके उंपर साहित्य सृजन किया है वह दलित साहित्य में आता है ू श [1]

अतीत और वर्तमान दलित साहित्य में बहुत अंतर है। कंवल भारती ने अतीत और वर्तमान साहित्य के बारे में लिखते हुए दलित साहित्य के वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर चिंता व्यक्त की है किएष पहले के दलित साहित्य की एक दिशा थीए परंतु वर्तमान के दलित साहित्य की कोई एक दिशा ना होकर अनेक दिशाएं हैं। वह अनेक दिशाओं में अपनी राह बना रहा है। कल के दलित साहित्य को सत्ता की चिंता नहीं थीए वर्तमान के दलित साहित्य को सत्ता की चिंता है। उसे सत्ता आकर्षित करने लगी है और उनकी चिंता में सत्ता के सरोकार भी दिखाई दे रहे हैं। कल का दलित साहित्य विचार परक थाए पर आज का दलित साहित्य व्यक्ति केंद्रित है और यह व्यक्ति स्वयं लेखक है। कल का दलित साहित्य समाज से जुड़ा हुआ थाए पर आज का दलित साहित्य काफी हद तक बाजारवाद से जुड़ रहा है। वह अपना बाजार नहीं बना रहा हैए ऐसा होता तो शायद अच्छा होता। वस्तुतः वह काफी हद तक बाजार की मांग पर लिखा जा रहा है। कल के दलित साहित्य की भूमिका सीमित थीए आज के दलित साहित्य की भूमिका सीमित नहीं है। आज का दलित साहित्य न सिर्फ साहित्य की

विभिन्न विधाओं में विस्तार पा रहा हैए बल्कि उसने राष्ट्रीय अखबारों और पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से गैर दलित के विशाल वर्ग को भी आकर्षित किया है।ष्2

दलित साहित्य में लगातार परिवर्तन होता रहा है। वर्तमान दलित साहित्य में वर्णाश्रम व्यवस्था से मुक्ति की आकांक्षाए आधुनिक जीवन मूल्यों की वकालत और अपनी स्वतंत्र अस्मिता की खोज आदि की अभिव्यक्ति है। आज अपनी अस्मिता की खोज की प्रक्रिया में यह अपने इतिहासए संस्कृतिए परंपराए महापुरुषों आदि को स्थापित करने में लगा हुआ है। साहित्य में उसकी यह अभिव्यक्ति भले ही अनपढ़ भाषा और शिल्प में हो रही हो पर इसकी उपेक्षा अब संभव नहीं।

बदलते परिदृश्य के बारे में डॉ रामचंद्र का कहना है ष फुलेएपेरियारए नारायण गुरुए अंबेडकर ने आत्म सम्मान और सामाजिक अस्मिता की जो भाऊ होंगे तैयार की थी तथा संघर्ष का जो दीप प्रज्वलित किया थाए वह अब और भी तेजी से प्रदिप्त को उठा है।

वेदनाए आक्रोश और आमूल परिवर्तन की आकांक्षाओं से दलितों ने अस्मिता के संघर्ष को एक आकार देना शुरू कर दिया था जिसे अछूतए अति शुद्रए चांडालएअवर्णए पंचम आदि नामों से विहित करके घृणाएहिकारत और दया के पात्र बना दिया गया थाए वही आज प्रखर आत्मबोध के साथ इन सारी शब्दावली यों और विशेषण को और विशेषण को ठुकरा कर स्वयं दलित के रूप में अपनी अस्मिता का बोध साहित्यए समाज और राजनीति तीनों ही स्तरों पर कर रहा हैए जबरदस्त दस्तक दे रहा है और यही नहीं अपने सार्थक उपस्थिति दर्ज कर रहा है तथा अपने अधिकार के लिए स्वयं संघर्ष कर रहा है।ष3

दलित साहित्य के बदलते परिदृश्य को देखते हुए कहा जा सकता है कि वर्तमान दलित साहित्य मर्यादित होकर सवर्ण मात्र या ब्राह्मणवाद के विरुद्ध गाली गलौज का ही साहित्य नहीं रहा है। दलित साहित्य आत्मकथा ओ से शुरू हुआ था वह आज साहित्य की अनेक विधाओं जैसे कहानी एउपन्यास

3

एनाटक एलेख एसंस्मरण एकविता आदि रूपों में लिखा जा रहा है। दलित साहित्य ने अपनी एक अलग विचारधारा की निर्मिति कर ली है जो दलितों की अस्मिता और आत्मसम्मान को अत्यधिक महत्व देती है। दलित साहित्य समानता की बात करता है। समाज में व्याप्त विषमता को समाप्त करने की अपील करता है। दलित साहित्य चाहता है कि समाज में सभी लोग अपने अपने अधिकारों एवं कर्तव्य का पालन करते भी अपना जीवनयापन कर सके।

दलित साहित्य में शब्दों का लालित्यए कोरा रोमांसए आध्यात्मिकता के राग रंग नहीं मिलते। दलित साहित्य में यातना एवं त्रासदी से उपजे गरम सुलगते सवाल साथ एक सशक्त साहित्यिक हस्तक्षेप देखने को मिलता है। दलित साहित्य मानवतावादी साहित्य हैए जो मानव के प्रति किए गए प्रत्येक अनाचार एअत्याचार का प्रतिकार करता है। दलित साहित्य प्रत्येक दुराग्रह एपूर्वग्रह से मुक्त है। वह संत समरसता एसमानाधिकार एसमान सम्मान और सामाजिक न्याय का पक्षधर है तथा वह मानव समाज में वर्ग एप्रांत एभाषा और धर्म के नाम पर किसी भी प्रकार का विभाजन स्वीकार नहीं करता। अंधविश्वासों एअंधश्रद्धाए अंधभक्तियों के प्रतिकूल वातावरण का पथ प्रदर्शक है।कल के दलित साहित्य की भूमिका सीमित तो थीए पर आज के दलित साहित्य की भूमिका सीमित नहीं है।आज का दलित साहित्य न सिर्फ साहित्य की विभिन्न विधाओं में विस्तार पा रहा हैए बल्कि उसने राष्ट्रीय अखबारों और पत्र.पत्रिकाओं के माध्यम से गैर दलित के विशाल वर्ग को भी आकर्षित किया है।

वर्तमान दलित साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि वह गैर दलितों को दलित पीड़ा का अहसास कराने में सफल हो गया है। ब्राह्मणवाद का अनावृत करने में आज के दलित साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। दलित साहित्य के बदलते अरे दृश्य पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य का जो परिवेश वातावरण शुरू में था उसमें समय के अनुसार परिवर्तन होता नजर आ रहा है। इसलिए दलित साहित्य में बदलाव अपरिहार्य है।

समाज में आए परिवर्तन के संदर्भ में कहा जा सकता है कि दशकों के सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन के पीछे महात्मा फुले डॉ आंबेडकर की परिवर्तनकारी विचारधारा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज दलित साहित्य भारतीय स्वरूप ले चुका है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में दलित साहित्य की अभिव्यक्ति सामने आई है। अस्मिता और आत्म सम्मान के लिए दो.तीन हिनता ग्रंथि को तोड़कर विभिन्न भाषाओं में दलित आत्मकथाएं अपने वेदना में जीवन अनुभव के साथ उपस्थित हैं। मराठी में दया पवार की श्अछूत श्,बलुतंद्धए शरण कुमार लिंबाले की श्अक्करमासी श्बेबी कांबले की श्अपने अपने पिंजरे श्और सूरजपाल चौहान की श्तिरस्कृतश्र तथा कौशल्या बाई सत्री कीश्दोहरा अभिशाप श्ने हिंदी क्षेत्र में स्थापित परंपरागत हिंदी साहित्य के समक्ष नई चुनौती पेश की है। यह आत्मकथाएं की हिनताबोध से दलित साहित्य को बाहर ला रही है। ओमप्रकाश वाल्मीकि और शरंनकुमार लिंबाले दोनों रचनाकारो ने अपनी पुस्तक ष्दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्रष में अनेक उदाहरणो द्वारा डाली साहित्य में आए नए बिम्ब एप्रतीक एरूपक को समझा है ष श दलित कविताओं में आए अंधेरा एपरिवेश की ज़िंदगी और सड़ांध सीलन भरे बंद कमरे और तंग मकानो में सिसकती जिंदगी दलित जीवन के यतार्थ है ष श 4

कविताओं में भी दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय ने ईश्वर होने पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। वे कहते हैं.

4

उस पल होती है
जब मेरे भीतर कुर्ता है सवाल
ईश्वर का जन्म
किस मां की कोख से हुआ
ईश्वर का बाप कौनष

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदुत्व वादियों को उन्हीं को अद्वैतवाद का उदाहरण देकर पूछते हैं.

चुहडे या डोम कि आत्मा
ब्रह्म का अंश क्यों नही है
मैं नहीं जानता
शायद आप जानते हो। .; **बस बहुत हो चुका**.

काव्यसंग्रह से

दलित कथा साहित्य में दलित संवेदना को व्यापक दृष्टि मिल रही है। हिंदी में ओमप्रकाश वाल्मीकि कंवल भारती सूरजपाल चौहान मीरा परमार यह उल्लेखनीय कहानीकार रहे हैं जिन्होंने कहानियों एवं उपन्यास के माध्यम से दलित चेतना को धारदार बनाया है।

इस प्रकार दलित साहित्य का स्वरूप व्यापक होता जा रहा है। विश्व दलित साहित्य सम्मेलनों का आयोजन तथा विदेशों में उक्त विषय पर शोध इस बात का परिचायक है कि दलित साहित्य की प्रासंगिकता कैसे बढ़ रही है। राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न भाषाओं में दलित रचनाकारों का बृहद समूह बन चुका है। दलित रचनाकारों की अपनी पहचान स्थापित हो रही है। कविता कहानी उपन्यास नाटक समीक्षाएं पत्रकारिता संस्मरण आदि विधाओं पर दलित साहित्यकारों की निरंतर लेखनी चल रही है।

दलित साहित्य में कहानी विधा उतनी चर्चित नहीं रही लेकिन उसका प्रभाव एक हद तक रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे दलित साहित्यकार है जिनकी लगभग सारी विधाओं की खूब चर्चा हुई है। उनकी कहानियां अपने कहानीपैन का एक अलग अंदाज लिए हुई थी। लेकिन उनकी विषय वस्तु प्रायः ब्राह्मणवादी संस्कृति एवं जातिवाद का विरोध रही है। इस समय दलित कहानी का समकालीन परिदृश्य थोड़ा समृद्ध हुआ। बाजार नई पूंजी लैंगिक उत्पीड़न दलित समाज के भीतर व्याप्त आधुनिकता विरोधी रूढिया उत्पीड़न के तरीकों को जन्म दिया गया।

टेकचंद भी एक महत्वपूर्ण दलित कहानीकार रहे हैं। उनकी कहानियां ग्रामीण जीवन का यथार्थ गांव की कस्बों में बदल जाने और अंततः शहर के परिवर्तन को अपना विषय बनाती है। उनकी कहानियां दिल्ली के आसपास के गांव में आने वाले दलित समाज और गैर दलित समाज के भीतर बदलाव पर केंद्रित है। उनका कहानी संग्रह 'मोर का पंख' ;टेकचंद 2015 यह प्रसिद्ध है। उनकी ए टी एम कहानी में एक पढ़ी.लिखी नौकर पेशा स्त्री की वेदना का चित्रण किया गया है। वह ससुराल वालों से कहती है कि 'मैं अपनी कमाई और एटीएम किसी को नहीं दूंगी।' ;**टेकचंद 2015** रू124यह दलित समाज में स्त्री अपने अधिकार का दावा पेश करती है।

5

रतन कुमार सांभरिया का 2015 में प्रकाशित कहानी. संग्रह 'एयर गन का घोड़ा' इस संग्रह की कहानियां तिरस्कार की परंपरा को खारिज करते हुए दलित शोषित में साहस संभल और स्वाभिमान पैदा करती है। उनकी 'पुरस्कार' कहानी उच्च संस्थानों में व्याप्त महिला शोषण की प्रवृत्ति की आलोचना करती है।

उपन्यास के क्षेत्र में सुशीला टाकभौरे का उपन्यास 'तुम्हें बदलना ही होगा' ;**टाकभौरे**2015 अपने विषय वस्तु और प्रवाह के कारण ध्यान आकर्षित करता है। उनके उपन्यासों की चिंता थी जातिवाद का खात्मा।मोहनदास नैमिशराय का 'मुक्ति पर्व' हिंदी दलित उपन्यासों में प्रधान उपन्यास माना जाता है ।इसमें सामाजिक विद्रोह दिखाई देता है। इस उपन्यास में दलितों को उनके जीवन में कदम .कदम पर उच्च वर्ण के लोगों की उनके प्रति दीन हीन भावना जुल्म अत्याचार आदि को भलीभांति चित्रित किया है।

हम आशा करते हैं कि जिन सवालों पर दलित साहित्यकारों की पहली पीढ़ी ने नहीं लिखा उस पर वर्तमान पीढ़ी लिखें। जेंडर पितृसत्ता भूमंडलीकरण बाजारवाद आदि को वे ब्राह्मणवाद के नए.नए रूप मानते हैं और इसकी सत्ता को मजबूत करने वाली शक्ति के षड्यंत्र को उजागर करने पर जोर देते हैं।

आलोचना का समकालीन परिदृश्य दलित साहित्य को गंभीरता से स्वीकार करते हुए इसका मूल्यांकन कर रहा है यह अच्छी बात है।समाज में एक हद तक बदलाव तो आया है लेकिन दलित उत्पीड़न और हत्याओं बलात्कारों पर बहिष्कार उनकी अनगिनत घटनाएं अभी भी घटती चली जा रही है। राजस्थान की डांगावास में दलित सहार की घटना घटित हुई ।इतना ही नहीं महाराष्ट्र में भूत मांगे परिवार की हत्या हो गई। लेकिन इन घटनाओं का सभी लोगों ने निषेध किया है ।हम आशा करते हैं कि धीरे .धीरे इस प्रकार की घटनाएं नहीं होगी क्योंकि अब दलित वर्ग आत्म निर्भर और स्वाभिमानी हो गया है।

निष्कर्षतरू

यह कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य में दलित साहित्य का स्वरूप अत्यंत व्यापक हो गया है ।दलित साहित्य ने मुक्ति और स्वतंत्रता के सवालों पर डॉ आंबेडकर के दर्शन को स्वीकार किया है । दलित साहित्य वर्ण व्यवस्था का विरोध करता है। जाति भेद का विरोध करता है । सामाजिक विषमता का विरोध करता है । सांप्रदायिकता का विरोध करता है । दलित साहित्य में स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की पक्षधरता है । भाषावाद लिंगवाद का दलित साहित्य विरोध करता है। दलित साहित्य अपना अस्तित्व निर्माण कर संस्कृति विकसित करने की ओर अग्रसर है । पुरानी अवधारणाओं मान्यताओं को नकार कर दलित संस्कृति को विकसित और समृद्ध करना दलित साहित्य का मुख्य उद्देश्य है । हम उम्मीद करते हैं कि दलित चेतना का यह दौर एक दिन दलितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए बाध्य करेगा।

संदर्भ सूची रू

1द्ध माता प्रसाद एदलित साहित्य दशा और दिशा एभारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन एनई दिल्ली एप्रथम संस्कारण ए2003एपृ॰ सं॰149

2द्ध कंवल भारती एदलित साहित्य की अवधारणा एबोधिसत्व प्रकाशन एरामपुर एउ ॰ प्र ॰ प्रथम संस्कारण 2006एपृ ॰13

3द्ध कंवल भारती एदलित साहित्य की अवधारणा एबोधिसत्व प्रकाशन एरामपुर एउ ॰ प्र ॰ प्रथम संस्कारण 2006एपृ ॰137

4द्ध ओमप्रकाश वाल्मीकि ए दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र ए

5द्ध टेकचंद ए2015ए मोर का पंख तथा अन्य कहानियां एदिल्ली एवाणी प्रकाशन ए

6द्ध सांभरिया रत्नकुमार ए2015 एएअरगण का घोडा एनई दिल्ली ए

7द्ध टाकभौरे सुशीला ए2015ए हमें बदलना ही होगा एदिल्ली एसामयिक प्रकाशन ए

8द्ध वाल्मीकि ओमप्रकाश ए2013एदलित साहित्य अनुभव संघर्ष एवं यथार्थ एदिल्ली एराधाकृष्ण प्रकाशन ए